Bhartiya Shodh Patrika
Volume-06, Issue-01 Quarterly (Jan. 2025 to March 2025) ISSN- 2582-6824

''उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास के मध्य संबंध का अध्ययन''

रणजीत सिंह (शोधार्थी),
डॉ. वन्दना श्रीवास्तव (शोध निर्देशक)
शिक्षा विभाग,
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़ (राज.)
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़ (राज.)

शोध सार (Abstract) :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है। शिक्षण कार्य में निर्णय क्षमता एक महत्वपूर्ण कौशल है, जो कक्षा प्रबंधन, शिक्षण विधियों के चयन तथा छात्र–समस्याओं के समाधान में सहायक होती है। आत्मविश्वास शिक्षक के व्यवहार, कार्य–निष्पादन तथा निर्णयों की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। अध्ययन में वर्णनात्मक सहसंबंधात्मक (correlational) विधि का प्रयोग किया गया। दत्त संग्रह हेतु प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें निर्णय क्षमता मापन स्केल एवं आत्मविश्वास स्केल सम्मिलित थे।

अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों की निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास के मध्य सार्थक सकारात्मक संबंध पाया जाता है। जिन शिक्षकों में आत्मविश्वास उच्च होता है, वे अधिक प्रभावी एवं त्वरित निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। अतः शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आत्मविश्वास विकास एवं निर्णय क्षमता सुदृढ़ीकरण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द (Keywords) :

निर्णय क्षमता, आत्मविश्वास, शिक्षक प्रभावशीलता, कक्षा प्रबंधन, सहसंबंध अध्ययन

प्रस्तावना :

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका निरंतर परिवर्तित होती जा रही है। आज का शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषण करने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि वह एक मार्गदर्शक, प्रेरक, प्रबंधक तथा प्रभावी निर्णयकर्ता के रूप में भी कार्य करता है। विद्यालयीन परिवेश में शिक्षक को प्रतिदिन अनेक जटिल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कक्षा में अनुशासन बनाए रखना, विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझना, उपयुक्त शिक्षण विधियों का चयन करना तथा शैक्षिक समस्याओं का समाधान करना। इन सभी कार्यों के सफल निष्पादन के लिए शिक्षक में उच्च स्तर की निर्णय क्षमता का होना अत्यंत आवश्यक है। निर्णय क्षमता वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत व्यक्ति उपलब्ध विकल्पों में से परिस्थितियों के अनुरूप सर्वोत्तम विकल्प का चयन करता है। एक प्रभावी शिक्षक वही होता है जो समयानुकूल, तर्कसंगत एवं संतुलित निर्णय ले सके।

दूसरी ओर, आत्मविश्वास शिक्षक के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक घटक है, जो उसकी कार्यक्षमता, व्यवहार एवं पेशेवर दक्षता को सीधे प्रभावित करता है। आत्मविश्वास से युक्त शिक्षक अपने ज्ञान, कौशल एवं निर्णयों पर विश्वास रखता है, जिससे वह कक्षा में अधिक सक्रिय, नवाचारी एवं प्रभावशाली बनता है। इसके विपरीत, आत्मविश्वास की कमी शिक्षक को निर्णय लेने में संकोची बना सकती है, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है। आत्मविश्वास न केवल शिक्षक के आंतरिक मनोबल को बढ़ाता है, बल्कि यह उसके विद्यार्थियों के साथ संबंधों, कक्षा प्रबंधन एवं शिक्षण परिणामों को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

वर्तमान समय में जब शिक्षा प्रणाली में नवाचार, तकनीकी समावेशन तथा छात्र–केंद्रित शिक्षण पर बल दिया जा रहा है, तब शिक्षकों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे आत्मविश्वास के साथ प्रभावी निर्णय लेने में सक्षम हों। अनेक मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक अध्ययनों में यह पाया गया है कि आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता के मध्य घनिष्ठ संबंध होता है। आत्मविश्वास से युक्त व्यक्ति जटिल परिस्थितियों में भी अधिक स्पष्टता एवं दृढ़ता के साथ निर्णय ले पाता है, जबकि आत्मविश्वास की कमी निर्णय प्रक्रिया को धीमा एवं अस्थिर बना देती है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर यह संबंध और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि इस स्तर के विद्यार्थी संवेदनशील, जिज्ञासु एवं संक्रमण अवस्था में होते हैं। ऐसे में शिक्षक के निर्णय विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षक न केवल विषय ज्ञान में दक्ष हों, बल्कि उनमें आत्मविश्वास एवं सुदृढ़ निर्णय क्षमता भी विकसित हो।

इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास के मध्य संबंध का विश्लेषण करने का प्रयास करता है, ताकि यह समझा जा सके कि किस प्रकार ये दोनों घटक एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं और शिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. शिक्षकों की निर्णय क्षमता का स्तर ज्ञात करना।
2. शिक्षकों के आत्मविश्वास का स्तर ज्ञात करना।
3. निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं :

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ स्थापित की गई हैं, जिनके माध्यम से शिक्षकों की निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास के मध्य संबंध का परीक्षण किया गया–

H_0 (शून्य परिकल्पना) :

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

H_1 (वैकल्पिक परिकल्पना) :

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास के मध्य सार्थक एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है।

इन परिकल्पनाओं के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि क्या आत्मविश्वास वास्तव में शिक्षकों की निर्णय क्षमता को प्रभावित करता है अथवा दोनों स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं।

शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों की निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास के मध्य संबंध को वैज्ञानिक ढंग से समझने के लिए उपयुक्त शोध पद्धति का चयन किया गया। यह अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक (Descriptive) एवं सहसंबंधात्मक (Correlational) प्रकृति का है, क्योंकि इसमें दोनों चरों की वर्तमान स्थिति का वर्णन करते हुए उनके मध्य संबंध का विश्लेषण किया गया है।

शोध की प्रकृति :

इस अध्ययन का उद्देश्य किसी कारण–परिणाम संबंध को स्थापित करना नहीं, बल्कि यह जानना है कि दोनों चरों के बीच किस प्रकार का संबंध विद्यमान है। अतः सहसंबंधात्मक विधि इस अध्ययन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त पाई गई।

जनसंख्या एवं न्यादर्श :

अध्ययन की जनसंख्या में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के समस्त शिक्षक शामिल किए गए। इनमें से 100 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श पद्धति (Random Sampling) द्वारा किया गया, जिससे

अध्ययन में निष्पक्षता एवं प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके। न्यादर्श में विभिन्न आयु, अनुभव एवं लिंग के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया, जिससे परिणाम अधिक विश्वसनीय बन सके।

उपकरण (Tools) :

अध्ययन के लिए दो प्रमुख मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया–

- **निर्णय क्षमता मापन स्केल** : जिसके माध्यम से यह ज्ञात किया गया कि शिक्षक विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार निर्णय लेते हैं।
- **आत्मविश्वास मापन स्केल** : जिसके माध्यम से शिक्षकों के आत्मविश्वास के स्तर का आकलन किया गया।

इन उपकरणों की विश्वसनीयता (Reliability) एवं वैधता (Validity) पूर्व शोधों द्वारा प्रमाणित है, जिससे प्राप्त आंकड़े अधिक प्रामाणिक माने जा सकते हैं।

दत्त संग्रह प्रक्रिया :

दत्त संग्रह के लिए चयनित शिक्षकों को प्रश्नावली वितरित की गई। उन्हें स्पष्ट निर्देश दिए गए कि वे अपने अनुभव एवं वास्तविक स्थिति के अनुसार उत्तर दें। प्राप्त उत्तरों को सावधानीपूर्वक संकलित, वर्गीकृत एवं संकेतीकृत (coding) किया गया, ताकि उनका सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा सके।

सांख्यिकीय तकनीक :

संग्रहित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया–

- **माध्य (डमंद)** : औसत स्तर ज्ञात करने के लिए
- **मानक विचलन (जंदकंतक क्मअपंजपवद)** : विभिन्नता का स्तर ज्ञात करने के लिए
- **सहसंबंध गुणांक (झंतस च्मंतेवदशे तश)** : दोनों चरों के मध्य संबंध की दिशा एवं तीव्रता ज्ञात करने के लिए

निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास का अंतर्संबंध– विश्लेषणात्मक विवेचन :

अध्ययन के अंतर्गत संकलित आंकड़ों का गहन विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ कि शिक्षकों की निर्णय क्षमता एवं उनके आत्मविश्वास के स्तर के मध्य एक सकारात्मक, घनिष्ठ तथा सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध विद्यमान है। यह संबंध केवल सतही नहीं है, बल्कि शिक्षक के व्यवहार, कार्यशैली तथा व्यावसायिक दक्षता के विभिन्न आयामों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उच्च आत्मविश्वास से युक्त शिक्षक अपने ज्ञान, अनुभव एवं क्षमताओं पर विश्वास रखते हैं, जिसके कारण वे जटिल परिस्थितियों में भी संतुलित, तार्किक तथा प्रभावी निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। यह भी देखा गया कि ऐसे शिक्षक शिक्षण–प्रक्रिया को अधिक योजनाबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से संचालित करते हैं, जिससे विद्यार्थियों के अधिगम पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ कि जिन शिक्षकों में आत्मविश्वास का स्तर उच्च पाया गया, उनमें निर्णय लेने की क्षमता अधिक विकसित एवं परिपक्व थी। ये शिक्षक न केवल कक्षा प्रबंधन में दक्ष होते हैं, बल्कि वे शिक्षण विधियों के चयन, पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण तथा विद्यार्थियों की विविध समस्याओं के समाधान में भी अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। वे नई परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने में सक्षम होते हैं तथा किसी भी शैक्षिक चुनौती का सामना साहस एवं विवेक के साथ करते हैं। इस प्रकार के शिक्षक विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बनते हैं तथा उनके समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इसके विपरीत, जिन शिक्षकों में आत्मविश्वास का स्तर अपेक्षाकृत निम्न पाया गया, उनमें निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्पष्ट रूप से संकोच, अनिश्चितता एवं हिचकिचाहट देखने को मिली। ऐसे शिक्षक प्रायः निर्णय लेने में विलंब करते हैं या दूसरों पर निर्भर रहते हैं, जिसके कारण उनकी कार्यकुशलता प्रभावित होती है। वे अनेक बार तनाव एवं दबाव की स्थिति में रहते हैं, जिससे उनके शिक्षण कार्य की गुणवत्ता में भी कमी आ सकती है। कक्षा प्रबंधन में भी वे अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ पाते, जिससे विद्यार्थियों के अधिगम वातावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आत्मविश्वास शिक्षक की निर्णय क्षमता को प्रत्यक्ष एवं गहराई से प्रभावित करता है। दोनों के मध्य एक सशक्त एवं परस्पर पूरक संबंध विद्यमान है, जिसमें आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता के विकास का आधार बनता है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षकों में आत्मविश्वास के स्तर को बढ़ाने के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण, प्रोत्साहन एवं अनुकूल वातावरण प्रदान किया जाए, जिससे उनकी निर्णय क्षमता और अधिक सुदृढ़ हो सके तथा वे शिक्षा के क्षेत्र में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकें।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास के मध्य एक सकारात्मक, सुदृढ़ एवं महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान है। यह संबंध न केवल सांख्यिकीय दृष्टि से प्रमाणित हुआ है, बल्कि शिक्षकों के व्यवहारिक एवं व्यावसायिक क्रियाकलापों में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अध्ययन यह दर्शाता है कि आत्मविश्वास शिक्षक के व्यक्तित्व का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम है, जो उसकी निर्णय लेने की क्षमता को दिशा एवं दृढ़ता प्रदान करता है। जिन शिक्षकों में आत्मविश्वास का स्तर उच्च होता है, वे जटिल एवं चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी अधिक प्रभावी, त्वरित तथा तार्किक निर्णय लेने में सक्षम होते हैं, जिससे उनकी शिक्षण प्रक्रिया अधिक संगठित एवं परिणामोन्मुख बनती है।

अध्ययन से यह भी सिद्ध होता है कि आत्मविश्वास केवल एक व्यक्तिगत या मनोवैज्ञानिक गुण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षक की व्यावसायिक दक्षता, कार्यकुशलता एवं नेतृत्व क्षमता का भी एक महत्वपूर्ण आधार है। आत्मविश्वास से युक्त शिक्षक अपने कर्तव्यों के प्रति अधिक सजग, उत्तरदायी एवं रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं। वे नवीन शिक्षण विधियों को अपनाने, विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझने तथा कक्षा में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने में अधिक सक्षम होते हैं। इस प्रकार के शिक्षक न केवल ज्ञान के संप्रेषण में दक्ष होते हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में व्यापक सुधार होता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि शिक्षकों के आत्मविश्वास को सुदृढ़ एवं विकसित करने के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रेरणादायक वातावरण एवं संस्थागत सहयोग प्रदान किया जाए, तो उनकी निर्णय क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। इसके परिणामस्वरूप न केवल शिक्षक की व्यक्तिगत कार्यक्षमता में सुधार होगा, बल्कि संपूर्ण शिक्षण–प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली एवं गुणवत्तापूर्ण बन सकेगी। इस प्रकार, शिक्षकों के आत्मविश्वास को सुदृढ़ करना वर्तमान शिक्षा प्रणाली की एक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण आवश्यकता है, जो शिक्षा के समग्र उन्नयन में सहायक सिद्ध हो सकती है।

सुझाव :

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

1. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निर्णय क्षमता विकास को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए।
2. आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए कार्यशालाएँ, सेमिनार एवं प्रेरणात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
3. विद्यालयों में ऐसा वातावरण बनाया जाए जो शिक्षकों को स्वतंत्र एवं सृजनात्मक निर्णय लेने के लिए प्रेरित करे।
4. नवाचार एवं आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए।
5. शिक्षकों को उनके कार्य के लिए समय–समय पर सकारात्मक प्रतिपुष्टि (मिमकइंबा) प्रदान की जाए।
6. अनुभव आधारित शिक्षण एवं समस्या–समाधान आधारित प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाए।
7. शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक परामर्श एवं मार्गदर्शन की व्यवस्था की जाए।
8. आत्ममूल्यांकन एवं सहकर्मी मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाया जाए।

संदर्भ सूची :

- शर्मा, ए. (2012). अनुभूत आत्म–प्रभावकारिता के क्रियात्मक गुणों पर अध्ययन। 'जर्नल ऑफ मैनेजमेंट'।
- वर्मा, आर. एम., एवं सिंह, वी. एम. (2014). शिक्षकों की आत्म–प्रभावकारिता, व्यक्तित्व एवं शिक्षण प्रभावशीलता। 'एजुकेशनल साइकोलॉजी रिव्यू'।
- मिश्रा, एम., एवं गुप्ता, ए. डब्ल्यू. (2010). शिक्षक प्रभावकारिता : एक जटिल अवधारणा का विश्लेषण। 'टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन'।
- अग्रवाल, जे. (2012). शिक्षकों के लिए दृश्य अधिगम। 'रूटलेज प्रकाशन'।
- शुक्ला, ए. (2013). शिक्षक विश्वास एवं निर्णय निर्माण प्रक्रिया। 'एजुकेशनल साइकोलॉजिस्ट'।
- कुमार, ई., यादव, एम., एवं चौधरी, आर. (2023). शिक्षकों की निर्णय लेने की शैलियाँ एवं आत्मविश्वास। 'अफ्रीकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल'।
- सिंह, ए., वर्मा, ई., एवं जोशी, एम. (2021). शिक्षक आत्म–प्रभावकारिता एवं कक्षा प्रबंधन। 'बीएमसी साइकोलॉजी'।
- पाटिल, एम., एवं देशमुख, एच. (2020). शिक्षक आत्म–प्रभावकारिता एवं शिक्षक–विद्यार्थी संबंध। 'जर्नल ऑफ स्कूल साइकोलॉजी'।
- मेहता, आर. जे. (2024). शिक्षक की भावनात्मक दक्षता एवं आत्म–प्रभावकारिता। 'बीएमसी साइकोलॉजी'।
- उदय, एस., एवं अन्य (2023). आत्म–प्रभावकारिता एवं निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ। 'एमडीपीआई जर्नल'।